

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 29 — वंशी की टेर

5 October 2026



शरद् की पूर्णिमा की रात, हर झुरमुट में खिली हुई मल्लिका और कोमल चाँदनी में नहाया वृन्दावन का वन — और प्रभु अपनी वंशी उठाते हैं; व्रज में ऐसा गान गूँजता है जिसे कोई प्रेमी हृदय रोक नहीं पाता।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की हमारी भक्तिमयी यात्रा। दशम स्कन्ध के इस उन्तीसवें अध्याय से व्रज की सर्वाधिक प्रसिद्ध लीला आरम्भ होती है। शुकदेव गोस्वामी बताते हैं कि प्रभु ने योगमाया का आश्रय लेकर दिव्य लीला का संकल्प कैसे किया; कैसे वंशी की टेर ने गोप-वधुओं को रात्रि में घरों से बाहर खींच लिया; कैसे उन्होंने पहले गृहस्थ-धर्म के वचनों से उन्हें लौटाना चाहा और फिर उनका उत्तर सुना; और अन्ततः वे कैसे अन्तर्धान हो गए, जिससे उनके आनन्द में घुला अभिमान हर लिया जाए।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण

- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 29 (उनतीसवाँ अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: कृष्ण और गोपियों का रासोत्सव-मिलन
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित को सुनाते हुए)
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: ब्रज में चौदनी से भरा वृन्दावन-वन और यमुना का पुलिन
- केंद्रीय विषय: वंशी की टेर; गोपियों का सर्वस्व-त्याग; कृष्ण का धर्मोपदेश और गोपियों का उत्तर; उनकी करुणा और अन्तर्धान
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 29, श्लोक 1-48
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)

पूर्व अध्याय का संदर्भ

अट्ठाईसवें अध्याय में प्रभु नन्दजी को वरुणलोक से लौटा लाए और गोपों को प्रकृति से परे अपना नित्य धाम दिखाया। ब्रज में उस आश्चर्य की स्मृति अभी ताज़ी ही थी कि शरद् की रातें आ पहुँचीं।

शरद् की रात्रि और वंशी का गान

शुकदेव गोस्वामी ने कथा का सूत्र फिर उठाया। ऋतु बदल चुकी थी; ब्रज की रातें निर्मल थीं और चारों ओर मल्लिका पूरी तरह खिल उठी थी। उन रातों को देखकर प्रभु ने — जो स्वयं में पूर्ण हैं और जिनकी कोई कामना शेष नहीं — अपनी योगमाया का आश्रय लेकर दिव्य लीला का संकल्प किया।

भगवानपि ता रात्रीः शारदोत्फुल्लमल्लिकाः ।

वीक्ष्य रन्तुं मनश्चक्रे योगमायामुपाश्रितः ॥ १ ॥

bhagavān api tā rātrīḥ śāradotphulla-mallikāḥ vīkṣya rantuṁ manaś cakre yoga-māyām upāśritaḥ

अर्थ: पूर्ण खिली हुई मल्लिका से सजी उन शरद्-रात्रियों को देखकर भगवान् ने भी अपनी योगमाया का आश्रय लेकर दिव्य लीला करने का मन बनाया। (स्कन्ध 10, अध्याय 29, श्लोक 1)

तभी चन्द्रमा उदित हुआ और अपनी शीतल रक्तिम किरणों से पूर्व दिशा का मुख ऐसे रँग गया जैसे चिरकाल बाद लौटा प्रियतम अपनी प्रिया को आनन्दित करता है; दिन की तपन से उपजा सबका सन्ताप मिट गया। उस अखण्ड मण्डल को — नवीन कुंकुम-सा अरुण और लक्ष्मीजी के मुख-सा मनोहर — तथा उसकी कोमल किरणों से रँगे वन को देखकर कृष्ण ने वंशी पर मधुर तान छेड़ दी, और वह गान मृगनयनी गोपियों का मन हर ले गया।

व्रज की स्त्रियों रात्रि में निकल पड़ती हैं

वह स्वर घरों और गोचर-भूमियों पर बह चला, और जिन्होंने उसे सुना वे अपने स्थान पर ठहर न सकीं। उनका मन तो बहुत पहले से कृष्ण के पास बँधा था; अब प्रत्येक अपने मार्ग से उन्हीं की ओर चल पड़ी — इतनी शीघ्रता से कि एक-दूसरी की हड़बड़ी किसी ने लक्ष्य न की, और चलते-चलते कुण्डल हिलते रहे।

वे पीछे क्या छोड़ आई, यह सूची स्वयं एक शिक्षा है। कोई दुहते-दुहते दोहनी वहीं छोड़ दौड़ पड़ी; किसी ने चूल्हे पर चढ़े दूध के उबलने की प्रतीक्षा न की; कोई खीर पकती ही छोड़ आई। कोई परोसते-परोसते उठ गई, किसी ने दूध पीते शिशु को नीचे रख दिया, कोई पति की सेवा से मुड़ गई, कोई अधूरा भोजन छोड़ चल दी; किसी के अंगों पर चन्दन आधा लगा रह गया, किसी की आँखों में काजल आधा, कोई वस्त्र-आभूषण उलटे-सीधे पहने ही आ गई। स्वजनों ने रोकना चाहा, पर वे न लौटीं, क्योंकि उनका हृदय गोपालन करने वाले प्रभु पहले ही हर चुके थे। और कुछ, जो घर में बन्द थीं और निकलने का मार्ग न पा सकीं, आँखें मूँदकर उन्हें मन में ऐसी उत्कण्ठा से थाम बैठीं कि और किसी के लिए स्थान न बचा।



वह गान सुनते ही व्रज की स्त्रियाँ अपने-अपने मार्ग से तुरन्त निकल पड़ीं, अधूरे काम वहीं छोड़कर; स्वजन रोकते रहे, पर वे लौटीं नहीं (श्लोक 4-9)।

कर्म-बन्धन कट जाते हैं

जो आ न सकीं, उनके विषय में शुकदेवजी एक आश्चर्यजनक बात कहते हैं। प्रियतम के विरह का असह्य ताप उनका समस्त अशुभ जला गया, और ध्यान में प्राप्त अच्युत के आलिंगन के आनन्द ने उनका पुण्य भी क्षीण कर दिया; दोनों बन्धन कटने पर उन्होंने गुणमय देह त्याग दी और उसी परमात्मा से एक हो गई — यद्यपि उन्होंने उन्हें केवल हृदय का प्रियतम ही जाना था।

राजा परीक्षित का प्रश्न

यहाँ राजा ने वह प्रश्न रखा जो किसी भी श्रोता के मन में उठ सकता है। इन गोपियों ने कृष्ण को प्रियतम जाना, ब्रह्मरूप में नहीं; फिर जिनकी बुद्धि तीनों गुणों में बहती थी, उनके लिए जन्म-मृत्यु का प्रवाह कैसे थमा?

शुकदेवजी ने शिशुपाल का स्मरण कराया, जिसने द्वेष करते हुए भी अन्ततः कृष्ण से तादात्म्य पाया; फिर उन गोपियों के विषय में क्या आश्चर्य, जिन्होंने उन्हें परम प्रिय माना? अविनाशी, अप्रमेय, गुणों से परे और फिर भी गुणों के स्वामी भगवान् का प्राकट्य एक ही प्रयोजन से होता है — मनुष्यों के परम कल्याण के लिए।

कामं क्रोधं भयं स्नेहमैक्यं सौहृदमेव च ।

नित्यं हरौ विदधतो यान्ति तन्मयतां हि ते ॥ १५ ॥

kāmaṁ krodhaṁ bhayaṁ snehaṁ aikyaṁ sauhṛdam eva ca nityaṁ harau vidadhato yānti tanmayatām hi te

अर्थ: जो नित्य श्रीहरि में अपना काम, क्रोध, भय, स्नेह, एकत्व-भाव या सौहार्द लगाए रखते हैं, वे निश्चय ही उन्हीं में तन्मय हो जाते हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 29, श्लोक 15)

यहीं वह कारण छिपा है जिसके लिए प्रभु ने यह लीला रची। वे दूर खड़े होकर प्रशंसा पाने नहीं उतरते; वे उनके उद्धार के लिए उतरते हैं जो अभी उन्हें अनन्त रूप में सोच भी नहीं सकते, और इसीलिए हृदय जो कुछ दे सके वही स्वीकार कर लेते हैं — उस असहाय आसक्ति को भी जो उन्हें केवल प्रियतम जानती है। क्योंकि वे परमात्मा हैं, कोई नाशवान् वस्तु नहीं, इसलिए जो उन्हें अर्पित होता है वह देने वाले को बाँधता नहीं, मुक्त कर देता है। शुकदेवजी ने कहा — उन अजन्मा प्रभु पर आश्चर्य मत करो, जिनकी कृपा से यह सृष्टि मुक्त होती है।



राजा परीक्षित पूछते हैं कि जिन्होंने कृष्ण को केवल अपना प्रियतम माना, उन्हें मुक्ति कैसे मिली; शुकदेव गोस्वामी शिशुपाल का दृष्टान्त देकर उत्तर देते हैं (श्लोक 12-15)।

कृष्ण उन्हें लौट जाने को कहते हैं

जब व्रज की स्त्रियाँ उनके सम्मुख आ खड़ी हुई, तब वक्ताओं में श्रेष्ठ कृष्ण ने ऐसे वचन कहे जिन्होंने उन्हें स्तब्ध कर दिया। स्वागत है, महाभाग्यवतियो; मैं तुम्हारा कौन-सा प्रिय करूँ? व्रज में सब कुशल तो है? अपने आने का प्रयोजन बताओ। फिर वे संरक्षक की भाँति बोले — यह रात्रि भयंकर है और भयानक जीवों से भरी, अतः लौट जाओ; तुम्हें न पाकर माता-पिता, पुत्र, भाई और पति खोज रहे होंगे, उन्हें चिन्ता में

मत डालो। पूर्ण चन्द्र से आलोकित यह पुष्पित वन तुमने देख लिया; अब लौटकर अपने पतियों की सेवा करो, क्योंकि बछड़े और बालक भूख से रो रहे हैं। अथवा तुम्हारा मन मेरे प्रति स्नेह से बँधा होने के कारण तुम आई हो; यदि ऐसा है तो यह उचित ही है, क्योंकि सभी प्राणी मुझमें प्रीति पाते हैं।

फिर धर्मज्ञ के रूप में उन्होंने स्पष्ट कर्तव्य उनके सामने रखा — स्त्रियों का परम धर्म है निष्कपट भाव से पति और उसके कुटुम्ब की सेवा तथा सन्तान का पालन; उच्च लोकों की अभिलाषा रखने वाली स्त्री को पति का त्याग नहीं करना चाहिए, चाहे वह निर्धन, रोगी, वृद्ध या मन्दबुद्धि हो, जब तक वह पतित न हो; और कुलीन स्त्री के लिए परपुरुष में आसक्ति स्वर्ग का द्वार रोकती तथा निन्दा और भय लाती है। इतना कहकर उन्होंने इन सबकी कुंजी भी दे दी।

श्रवणाद् दर्शनाद् ध्यानान्मयि भावोऽनुकीर्तनात् ।

न तथा सन्निकर्षेण प्रतियात ततो गृहान् ॥ २७ ॥

śravaṇād darśanād dhyānān mayi bhāvo 'nukīrtanāt na tathā sannikarṣeṇa pratiyāta tato gṛhān

अर्थ: मेरे प्रति प्रेम श्रवण, दर्शन, ध्यान और कीर्तन से बढ़ता है, शारीरिक सामीप्य से उतना नहीं; इसलिए अपने घरों को लौट जाओ। (स्कन्ध 10, अध्याय 29, श्लोक 27)

जिन्होंने वंशी से उन्हें बुलाया था, वही अब कह रहे थे कि देह की निकटता भक्ति को नहीं बढ़ाती — श्रवण, स्मरण और कीर्तन हर युग में, हर घर के भक्त के लिए खुले हैं।



स्नेहपूर्वक स्वागत करके प्रभु रक्षक की भाँति और धर्मज्ञ की भाँति बोलते हैं, और व्रज की स्त्रियों से लौटकर अपने कुटुम्ब की सेवा करने को कहते हैं (श्लोक 18-27)।

चाँदनी में मौन खड़ी गोपियों

उनके ये वचन गोपियों को कटु लगे। आशा भंग होने पर वे ऐसे शोक में डूब गई जिसे सहज में त्याग न जा सके: मुख नीचे झुक गए, शोक की तप्त साँसों से बिम्ब-सरीखे अधर सूख गए, पैर के अँगूठे से भूमि कुरेदती रहीं, और आँसुओं ने उनका लगाया केसर धो दिया। फिर आँखें पोंछकर, जिन्होंने उनके लिए हर दूसरी चाह छोड़ दी थी, वे कोमल उलाहने से भरे रूँधे कण्ठ से उत्तर देने लगीं।

गोपियों का उत्तर

मैवं विभोऽर्हति भवान् गदितुं नृशंसं सन्त्यज्य सर्वविषयांस्तव पादमूलम् ।

भक्ता भजस्व दुरवग्रह मा त्यजास्मान् देवो यथादिपुरुषो भजते मुमुक्षून् ॥ ३१ ॥

*maivam vibho 'rhati bhavan gaditum nr-samsam santyajya sarva-vishayams tava pada-mulam
bhakta bhajasva duravagraha ma tyajasman devo yathadi-purusho bhajate mumukshun*

अर्थ: हे प्रभो, आप ऐसे कठोर वचन न कहें। सब कुछ त्यागकर हम आपके चरणों की शरण में आई हैं; जैसे आदिपुरुष मुमुक्षुओं को अपनाते हैं, वैसे ही हमें अपनी भक्त जानकर स्वीकार कीजिए। (स्कन्ध 10, अध्याय 29, श्लोक 31)

उन्होंने उनकी ही शिक्षा उन्हीं के शब्दों में लौटा दी। धर्मज्ञ आपने कहा कि स्त्री का धर्म पति, सन्तान और कुटुम्ब की सेवा है; तो वही सेवा आपकी कर ली जाए — क्योंकि आप ही समस्त देहधारियों के परम प्रिय सुहृद् और आत्मा हैं, और जो आपको अर्पित होता है वह सबको पहुँचता है, जैसे जड़ में डाला जल हर शाखा सींच देता है। विवेकी जन आप ही में, अपने नित्य प्रिय आत्मा में रमते हैं; दुःख देने वाले पति-पुत्रादि से क्या मिलना? हे कमलनयन, प्रसन्न होइए और चिरकाल से आप पर टिकी आशा मत काटिए। हमारा चित्त, जो कभी घर में रमता था, आपने हर लिया; हाथों में गृहकार्य की शक्ति नहीं रही; चरण आपके चरणों से एक पग भी नहीं हटते। हम व्रज लौटें तो कैसे, और वहाँ करें भी क्या?

वे प्रार्थना करती रहीं — आपकी मुस्कान, चितवन और मधुर गान ने हममें जो अग्नि जगाई है उसे शान्त कीजिए; और यदि न करेंगे, तो विरहाग्नि में देह होम कर हम ध्यान के बल से ही आपके चरणों के पथ तक पहुँच जाएँगी। जिन चरणों की रज आपके सेवक पाते हैं, उसी के लिए आपके वक्षःस्थल पर स्थान पाई हुई श्री भी तुलसी से होड़ करती हैं; वही रज हमारी एकमात्र याचना है। हम घर छोड़कर केवल आपकी सेवा के लिए आई हैं — हमें अपनी सेवा दीजिए, और इन दासियों पर अपना कर-कमल रख दीजिए।



आँसू पोंछकर गोपियाँ प्रभु के ही वचनों से उनके उपदेश का उत्तर देती हैं और उनके चरणों में भक्त-रूप में स्वीकार किए जाने की याचना करती हैं (श्लोक 31-39)।

यमुना-पुलिन पर प्रभु की करुणा

उनकी यह विह्वल विनती सुनकर योगेश्वरों के ईश्वर धीरे से हँसे और करुणावश उन्हें सन्तुष्ट किया, यद्यपि वे स्वयं में ही रमण करने वाले आत्माराम हैं। प्रियतम के दर्शन से जिनके मुख खिल उठे थे, उन गोपियों से घिरे, मल्लिका-सी उज्ज्वल मुस्कान लिए वे तारों के बीच चन्द्रमा-से शोभित हुए। उनके गान में प्रशंसित और स्वयं भी गाते हुए, वैजयन्ती माला धारण किए वे वन को सुशोभित करते हुए उनके साथ नदी के उस पुलिन पर आए, जहाँ लहरों की वायु से बालू शीतल थी और हवा कुमुदों की सुगन्ध लिए बह रही थी। वहाँ उन्होंने अपने सान्निध्य का आनन्द देकर उनका हृदय प्रसन्न कर दिया।



करुणा से द्रवित होकर प्रभु उन्हें सन्तुष्ट करते हैं और उनके साथ यमुना-पुलिन पर आते हैं, जहाँ बालू शीतल है और वायु कुमुदों की सुगन्ध लिए बहती है (श्लोक 42-45)।

आभेमान और अन्तर्धान

महात्मा प्रभु से ऐसा मान पाकर गोपियाँ गर्वित हो उठीं और स्वयं को पृथ्वी की सबसे सौभाग्यवती स्त्रियाँ मानने लगीं। और उन्होंने यह देख लिया।

तासां तत् सौभगमदं वीक्ष्य मानं च केशवः ।

प्रशमाय प्रसादाय तत्रैवान्तरधीयत ॥ ४८ ॥

tāsāṁ tat-saubhaga-madam vikṣya mānaṁ ca keśavaḥ praśamāya prasādāya tatraivāntaradhiyata

अर्थ: उनके सौभाग्य के उस मद और अभिमान को देखकर केशव, उस अभिमान को शान्त करने तथा उन पर कृपा करने के लिए, वहीं अन्तर्धान हो गए। (स्कन्ध 10, अध्याय 29, श्लोक 48)

इस प्रकार यह अध्याय प्रेम के हटने से नहीं, उसके गहनतम कर्म से पूर्ण होता है। जिन्होंने वंशी से बुलाया था, वही ओझल हो गए — और यह छिपना करुणा था, क्योंकि भक्त और प्रियतम के बीच यदि कुछ खड़ा हो सकता है तो वह अभिमान ही है।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. दिव्य लीला योगमाया पर आश्रित है। इस लीला से पूर्व पूर्णकाम प्रभु ने अपनी ही आध्यात्मिक शक्ति का आश्रय लिया (श्लोक 1)। आगे जो घटित होता है वह इस संसार की घटना नहीं, और उसे सांसारिक मापदण्डों से नहीं मापना चाहिए।
2. जो भाव पूर्णतः उन पर टिक जाए, वही उन तक का मार्ग बन जाता है। काम, क्रोध, भय, स्नेह, एकत्व या सौहार्द — इनमें से कोई भी, यदि निरन्तर श्रीहरि की ओर लगा रहे, तो तन्मयता में ही परिणत होता है (श्लोक 15)।
3. भक्ति श्रवण, स्मरण और कीर्तन से बढ़ती है। स्वयं प्रभु सिखाते हैं कि देह की निकटता उनके प्रेम का माप नहीं (श्लोक 27) — यह हर उस भक्त का आश्वासन है जो वृन्दावन में नहीं जन्मा।
4. सबके आत्मा को अर्पित सेवा हर कर्तव्य पूर्ण कर देती है। गोपियाँ कृष्ण के बताए धर्म को नकारतीं नहीं; वे प्रार्थना करती हैं कि वही सेवा सब प्राणियों के आत्मस्वरूप प्रभु को अर्पित हो (श्लोक 31) — क्योंकि जड़ में दिया गया जल हर शाखा तक पहुँचता है।
5. उनका अन्तर्धान होना भी उनकी कृपा है। उन्हीं की कृपा से उपजा अभिमान भी अभिमान ही है, और वे स्वयं ओझल होकर उसे हर लेते हैं (श्लोक 48)। जब वे दूर जाते दिखें, तब वे सबसे निकट कार्य कर रहे होते हैं।

एक भक्तिमय चिन्तन

इस अध्याय से जो भीतर टिक जाता है वह केवल चाँदनी में बजी वंशी नहीं, प्रभु के उत्तर की वह विचित्र कठोरता भी है। गोपियाँ सब कुछ छोड़ आई हैं — चूल्हे पर चढ़ा दूध, गोद का शिशु, आधा आँजा नेत्र — और उनका पहला वचन है: घर लौट जाओ। जिन कर्तव्यों को वे छोड़ आई थीं, उन्हीं की वे प्रशंसा करते हैं, और कहते हैं कि रसोई में भी उन्हें उतनी ही सच्चाई से प्रेम किया जा सकता है जितना वन में। इसके बाद ही वे

उन्हें स्वीकार करते हैं। सम्भवतः कृपा का क्रम यही है: वे हमारे प्रेम को परिस्थितियों पर नहीं टिकने देते — सुन्दर रात, पवित्र स्थान या कोई आता-जाता भाव — अपितु परखते हैं कि वह तब भी टिकता है या नहीं जब वे स्वयं दूर धकेलते-से जान पड़ें।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज अपना सामान्य कर्तव्य छोड़िए नहीं, प्रभु को अर्पित कीजिए। अगला कार्य आरम्भ करने से पहले मन-ही-मन कहिए: *यह सेवा आपके लिए है।* फिर जब हाथ काम में लगे हों, तब कान और जिह्वा उन्हीं के पास रहें — एक श्लोक सुनिए, उनके चाँदनी-सने रूप का स्मरण कीजिए, और काम करते हुए धीरे-धीरे उनका नाम गाइए। आरम्भ इस जप से: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

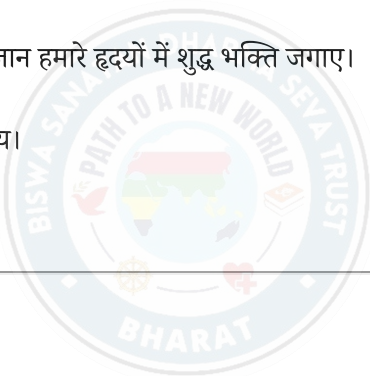
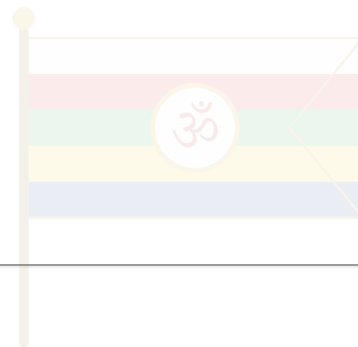
उपसंहार

दशम स्कन्ध का यह उनतीसवाँ अध्याय रास-लीला का आरम्भ एक शरद्-रात्रि, एक वंशी और उस प्रेम से करता है जिसने उत्तर देने के लिए सब कुछ छोड़ दिया। कृष्ण व्रज की स्त्रियों को गृहस्थ-धर्म का स्पष्टतम और भक्ति का गहनतम उपदेश देकर घर लौटाते हैं; वे उत्तर देती हैं कि सारी सेवा उन्हीं की है जो सबके आत्मा हैं; और वे, करुणा से हँसते हुए, अपना सान्निध्य देकर फिर उनका अभिमान हरने को अन्तर्धान हो जाते हैं। एक ही सत्य सबको जोड़े रखता है: जो हृदय पूर्णतः हरि को सौंप दिया जाए, वह उन्हीं तक पहुँचता है।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।



संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण, दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), उनतीसवाँ अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञान • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संबंध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-29-gopis-meet-krishna-for-the-rasa-dance-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

